है। यह ठीक है कि कारण कार्य के पहले आता है, लेकिन किसी कार्य के पहले एक साथ कई घटनाएँ घटित होती हैं। उन सभी घटनाओं को कारण नहीं कहा जाता है। उनमें से कुछ घटनाएँ अनावश्यक होती है, और कुछ घटनाएँ कार्य के सम्पादन के लिए आवश्यक है। उन आवश्यक घटनाओं में जो घटना कार्य का आसन्न या निकटवर्त्ती होती है, वही कारण कहलाती है। निकटवर्ती घटना को तात्कालिक कहा जाता है, क्योंकि यह कार्य के तुरंत पहले आती है। किसी व्यक्ति की दुर्घटना हो जाती है, और उसका इलाज अस्पताल में होता है। इसी दौरान उसकी मृत्यु हो जाती है। साधारण तौर पर दुर्घटना मृत्यु का कारण माना जाता है, या इलाज में लापरवाही को भी मृत्यु का कारण कहा जा सकता है। परन्तु ये दोनों आसन्न या तात्कालिक कारण नहीं है, बल्कि उस व्यक्ति की हृदयगति का रुक जाना तात्कालिक कारण है। *अतः कारण नियत, पूर्ववर्त्ती, अनौपाधिक और तात्कालिक या आसन्न होता है। जे. एस. मिल* ने कारण के इस स्वरूप को गुणात्मक लक्षण कहा है।

कारण का स्वरूप मात्र गुणात्मक नहीं होता है, वरन् परिमाणात्मक भी होता है। परिमाणात्मक दृष्टि से कारण और कार्य की मात्रा बराबर होती है। कारण अपनी मात्रा के बराबर का कार्य पैदा करता है, न तो उससे कम, न अधिक। दस किलो गेहूँ को पिसाने पर दस किलो आटा मिलता है। गेहूँ कारण है, आटा कार्य। जिस मात्रा में बिजली की धारा बहती है, उसी मात्रा में बिजली की रोशनी प्राप्त होती है, अर्थात् विद्युत ऊर्जा ताप ऊर्जा में बदल जाती है परन्तु दोनों ऊर्जा की मात्रा बराबर है। यदि कारण और कार्य बराबर नहीं हो, तो :—

(क) कारण कार्य से अधिक होगा या

(ख) कारण कार्य से कम होगा।

परन्तु ये दोनों विकल्प सही नहीं हैं। यदि कारण कार्य से अधिक हो, तो अन्ततः कार्य ही बचा रह जायेगा और कारण का अभाव हो जायेगा। पर कार्य कारण के बिना नहीं हो सकता, इसलिए पहला विकल्प असंभव है। यदि कारण कार्य से कम हो, तो कारण बढ़ता जायेगा, और कार्य घटते-घटते शून्य हो जायेगा। कारण है, तो कार्य भी अवश्य होगा। अतः दूसरा विकल्प भी संभव नहीं है। दोनों विकल्पों की असंभावना को निम्नलिखित गणितिक (Mathematical) उदाहरण से समझा जा सकता है :—

पहला विकल्प

कारण	*कार्य*
10, 12, 14, 16, 18, 20	9, 7, 5, 3, 1, (– 1)

स्पष्ट है कि कारण की मात्रा जितनी अधिक होगी, कार्य की मात्रा उतनी ही घटेगी। अन्ततः कारण ही कारण रहेगा, कार्य का नामोनिशान नहीं रहेगा।

दूसरा विकल्प

कारण	*कार्य*
9, 7, 5, 3, 1, (– 1)	10, 12, 14, 16, 18, 20

स्पष्ट है कि ज्यों-ज्यों कारण घटता है, त्यों-त्यों कार्य बढ़ता है, और अन्ततः कार्य ही कार्य रहता है, कारण का नामोनिशान नहीं रहता है।

कारणता सिद्धान्त के अनुसार प्रत्येक घटना या कार्य का कोई-न-कोई कारण अवश्य होता है। यह एक वैज्ञानिक नियम है जिसे दर्शनशास्त्र में भी स्वीकारा जाता है, और एक आम आदमी भी इसे स्वीकारता है। आम आदमी मानकर चलता है कि विश्व में जो भी घटनाएँ घटती हैं, उसके पीछे ईश्वर की मर्जी होती है, अर्थात् ईश्वर उन घटनाओं का कारण होता है। ईश्वरवादी दार्शनिक भी आम आदमी के इस विश्वास का समर्थन करता है। आम आदमी कारणकार्य की व्याख्या नहीं कर पाता है, जबकि ईश्वरवादी दार्शनिकों की मान्यता है कि मानव-कर्मों के शुभाशुभ के आधार पर ही ईश्वर विश्व की घटनाओं को सृजित करता है। विश्व में होनेवाली घटनाएँ कई तरह की होती हैं — प्राकृतिक या भौगोलिक, जैविक, आर्थिक, राजनैतिक, नैतिक, धार्मिक इत्यादि। ईश्वरवादियों की दृष्टि में इन सब घटनाओं या कार्य के लिए पूर्ण उत्तरदायी ईश्वर है क्योंकि मनुष्य ईश्वर का निमित्तमात्र होकर ही कोई कार्य करता है। परन्तु अनीश्वरवादी दार्शनिक इन सब घटनाओं का कारण प्रकृति में होनेवाले नियमों को बतलाता है। मनुष्य के कर्म भी उसकी प्रकृति (स्वभाव) के अनुसार ही होते हैं। अतएव मनुष्य के शुभाशुभ का आधार भी प्रकृति है। विज्ञान भी मानता है कि प्रकृति में होनेवाली घटनाएं प्रकृति के नियमों के अनुसार ही संचालित होती हैं। प्रकृति के ये नियम ही कारणकार्य नियम कहलाते हैं। साधारणतः कारण उस घटना को कहा जाता है, जो पहले आता है और कार्य वह है, जो बाद में आता है। यही आम धारणा है। लेकिन पहले आनेवाली सभी घटनाओं को कारण नहीं कहा जा सकता है। इसलिए कारण के स्वरूप या लक्षण को जानना आवश्यक है।

कारण का स्वरूप
(Nature of Cause)

किसी कार्य के पहले आनेवाली वह घटना, जो नियमित रूप से उस कार्य के पहले आती है, कारण कहलाती है। इस परिभाषा में दो मुख्य बातें बतायी गयी हैं — (i) कारण एक नियमित घटना है, (ii) कारण एक पूर्ववर्ती घटना है। नियमित का अर्थ है जो हमेशा अपवादरहित होकर घटित हो। जैसे — धुआँ आग के पहले और हमेशा घटित होता है। इसलिए आग का कारण धुआँ है। परन्तु कभी-कभी धुआँ के होने पर भी आग उत्पन्न नहीं होती है, यदि ईंधन भींगी हो। आगरूपी कार्य के लिए भींगापन का नहीं होना एक शर्त है। इसलिए धुआँ को आग का नियमित कारण मानने में एक उपाधि आती है। फलतः धुआँरूपी कारण में नियमितता का अभाव होने से धुआँ को आग का कारण नहीं माना जा सकता है। कभी-कभी आग दीखती है, लेकिन धुआँ नहीं होता है। जैसे — गर्म सलाखें। अतएव कारण केवल नियमित और पूर्ववर्ती नहीं होता है, बल्कि वह अनौपाधिक भी होता